आर्सेनिक से बचाव के लिए जरूरी है कुएं का पानी

स्वतंत्र मिश्र

उत्तर प्रदेश का बलिया और बिहार का भोजपुर जिला आर्सेनिक की चपेट में है। आर्सेनिक युक्त पानी पीने से यहां के लोग पहले मेलानोसिस (शरीर के विभिन्न अंगों पर काले-काले धब्बा पड़ना), फिर केटोसिस (काले धब्बों का गांठ में तब्दील होना और उसमें मवाद भर जाना) और अंततः कैंसर से पीड़ित होकर मरने को विवश हैं। कोलकाता के जादवपुर विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कूल ऑफ इंवायरमेंटल स्टडीज के निदेशक प्रोफेसर दीपांकर चक्रवर्ती ने 'शुक्रवार' को बताया, 'बलिया और भोजपुर का शाहपुर इलाका एशिया के सर्वाधिक आर्सेनिक ग्रस्त इलाकों में से एक है।' पिछले दो दशकों के दौरान इस इलाके में कम-से-कम 2000 लोगों की मौत आर्सेनिक युक्त पानी पीने से हो चुकी है।

दरअसल 1990 के दशक में केंद्र और राज्य सरकारों ने पूरे देश में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पीने योग्य पानी पहुंचाने के लिए हैंडपंप (नलकूप) लगवाने शुरू कर दिए और डॉक्टरों ने भी अपने मरीजों को कुएं का पानी नहीं पीने और साफ पानी के लिए नलकूप का पानी इस्तेमाल करने के लिए कहना शुरू कर दिया। लगभग एक दशक बीत जाने के बाद पता चला कि नलकूप के पानी में आर्सेनिक की मात्रा खतरनाक स्थिति को पार कर चुकी है। कई शोध हुए तो पता लगा कि कुएं का पानी सेहत के लिए सबसे अच्छा होता है। नलकूप में आर्सेनिक की मात्रा ज्यादा क्यों होती है और कुएं का पानी सेहत के लिए क्यों अच्छा है, इस सवाल के जवाब में दीपांकर कहते हैं कि कुएं का पानी खुला होने की वजह से धूप और हवा (ऑक्सीजन) के संपर्क में रहता है। दूसरी बात यह है कि कुएं के पानी में मौजूद आयरन (लौह तत्व) के संपर्क में आकर आर्सेनिक नीचे चला जाता है। यही वजह है कि हमलोग नलकूप की बजाय कुएं का पानी पीने पर ज्यादा जोर दे रहे हैं। गौरतलब है कि दीपांकर इस इलाके में कुआं सहेजने के काम में जुटे सामाजिक कार्यकर्ता सौरभ सिंह के बुलावे पर आते हैं और गांव-गांव घूमकर लोगों से पारंपरिक कुएं को जिंदा करने की अपील करते हैं। पारंपरिक कुएं को जिंदा करने की इस कहानी में 95 साल के धनिकराम वर्मा भी शामिल हैं। कुएं की साफ-सफाई के काम में धनिक के बेटे रमेश कुमार वर्मा भी जी-जान से जुटे रहते हैं। धनिक अपने 12 सदस्यीय दल द्वारा कुएं की सफाई कर लेने के बाद खुद कुएं में उतरते हैं और सफाई का काम ठीक तरह से हुआ है या नहीं, इसे प्रमाणित करते हैं।

हाल ही में राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन (एनएचआरसी) के एक दल ने बलिया का दौरा किया था और वहां के नलकूप के पानी में आर्सेनिक का स्तर खतरनाक स्थिति में पहुंचा हुआ पाया। एनएचआरसी ने उत्तर प्रदेश सरकार से बलिया जिले के गांवों में आर्सेनिक की वजह से जहरीले हो चुके पानी के पीने से बड़ी संख्या में लोगों के मरने के बारे में एक महीने के भीतर रिपोर्ट सौंपने को कहा है। एनएचआरसी के अनुसार, ग्रामीण विकास मंत्रालय के लिए नेशनल लेवल मॉनिटर ने भी आर्सेनिक से होने वाली मौत पर एक रिपोर्ट तैयार करके 20 महीने पहले उत्तर प्रदेश सरकार को भेजी थी लेकिन सूबे की सरकार ने इस दिशा में कोई सक्रियता नहीं दिखाई थी, लेकिन 15 जून को बलिया नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी संतोष मिश्र ने शहर के 25 कुओं का जीर्णोद्धार कराने की घोषणा की है। वहीं दूसरी ओर बिहार सरकार की दिलचस्पी कुओं को जिंदा करने की बजाय पानी के बड़े-बड़े संयंत्र लगाने में है। बिहार के भोजपुर में 2009-10 में करोड़ों रुपये की लागत से पाइप से जलापूर्ति की योजना शुरू की गई थी। इस योजना के तहत बिहार के भोजपुर जिले के अलावा बक्सर, पटना, वैशाली और भागलपुर जिले के सैकड़ों गांवों में पाइप से पानी पहुंचाने की योजना है। वैशाली के बिदुपुर गांव में पानी की आठ टंकियों का निर्माण भी किया जा चुका है। बिहार के जन स्वास्थ्य व अभियांत्रिकी विकास (पीएचईडी) मंत्रालय की ओर से जारी किए गए बयान में कहा गया कि भूजल में आर्सेनिक कहां-कहां है, इसका पता लगाना मुश्किल है। यही वजह है कि पाइप से गंगा किनारे की बड़ी आबादी को पीने योग्य पानी पहुंचाए जाने की योजना बनाई गई है।

बलिया में कुएं को जिंदा करने के सस्ते और देसी उपायों के बारे में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र का मानना है कि जब चार-पांच हजार रुपये खर्च करके पीने का पानी मिल रहा हो तब करोड़ों और अरबों के उपाय किए जाएं तो मन में शंका का उठना लाजिमी है। एक गैर-सरकारी इनर वॉयस फाउंडेशन संगठन द्वारा तैयार किए गए एक आंकड़े के अनुसार बलिया में 5000 और शाहपुर इलाके में 7000 कुएं हैं। एक कुएं के निर्माण में छह लाख रुपये का खर्च आता है और इस हिसाब से उत्तर प्रदेश सरकार के पास कुएं के तौर पर तीन अरब रुपये की संपत्ति है और इसे सहेजने का खर्च दो करोड़ आएगा। बिहार सरकार के पास सिर्फ शाहपुर इलाके में कुएं के बतौर 4.20 अरब रुपये की पारंपरिक संपत्ति है और इसे सहेजने का खर्च 2.8 करोड़ रुपये आएगा। दोनों राज्यों की सरकारें आर्सेनिक से मुक्ति पाने के लिए अगर कुआं बचाने में कुछ करोड़ खर्च कर दे तो इन इलाकों के लोगों की सेहत फिर से खिलखिला उठेगी। ■

आर्सेनिक ग्रसित इलाके बलिया और भोजपुर में वैज्ञानिक पीने योग्य पानी के लिए पारंपरिक कुओं की ओर लौटने की सलाह दे रहे हैं। गैर-सरकारी संगठन 'इनर वॉयस फाउंडेशन' और 95 वर्षीय धनिकराम वर्मा की पहल से कुओं को साफ किया जा रहा है। बलिया नगरपालिका ने भी शहर के 25 कुओं का जीर्णोद्धार करने की घोषणा की है